International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 6, Issue 12, Dec 2019
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

भारतीय विदेश नीति में कौटिल्य के नीतियों के प्रभाव की समीक्षा करें : मोदी जी के कार्यकाल में

डॉ विपिन कुमार मेहता

एसोसिएट प्रोफेसर,, राजनीति शास्त्र विभाग

डॉ रामजी मेहता आदर्श संस्कृत महाविद्यालय,

मालीघाट, मुजफ्फरपुर

(बिहार) 842001

सार

भारतीय विदेश नीति एक सतत विकास की प्रक्रिया है, जो ऐतिहासिक अनुभवों, भौगोलिक वास्तविकताओं और बदलती वैश्विक परिस्थितियों से आकार लेती है। प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन के महानतम विद्वानों में से एक, कौटिल्य, ने अपने अर्थशास्त्र में शासनकला, कूटनीति और विदेश नीति के सिद्धांतों का विस्तृत वर्णन किया है। यद्यपि सदियाँ बीत चुकी हैं, कौटिल्य के विचार आज भी भारतीय विदेश नीति के कुछ पहलुओं में प्रासंगिक दिखाई देते हैं, विशेषकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में। कौटिल्य का विदेश नीति दर्शन 'मंडल सिद्धांत' और 'षड्गुण' पर आधारित है। मंडल सिद्धांत पड़ोसी राज्यों के साथ संबंधों की जटिल गतिशीलता की व्याख्या करता है, जिसमें मित्र, शत्रु और तटस्थ राज्यों की पहचान करना शामिल है। 'षड्गुण' विदेश नीति के छह पहलुओं - संधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव और समाश्रय - का वर्णन करता है, जिनका

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

उपयोग विभिन्न परिस्थितियों में राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए किया जा सकता है। मोदी सरकार की 'पड़ोसी प्रथम' नीति, जिसके तहत पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को प्राथमिकता दी जाती है, कौटिल्य के मंडल सिद्धांत से प्रेरित हो सकती है। कौटिल्य ने पड़ोसी राज्यों के महत्व को रेखांकित करते हुए मित्रवत संबंधों को बढ़ावा देने और संभावित खतरों से निपटने की सलाह दी थी। मोदी सरकार ने बांग्लादेश, भूटान, नेपाल और श्रीलंका जैसे पड़ोसी देशों के साथ कनेक्टिविटी, व्यापार और सुरक्षा सहयोग को बढ़ाने पर जोर दिया है। हालांकि, पाकिस्तान और चीन के साथ संबंध मंडल सिद्धांत के शत्रु और मध्यस्थ राज्यों की जटिलताओं को दर्शाते हैं।

मुख्य शब्द

भारतीय, विदेश, नीति, रणनीतिक, स्वायत्तता

भूमिका

कौटिल्य ने राष्ट्रीय हितों की सर्वोच्चता पर जोर दिया और किसी भी बाहरी शक्ति पर अत्यधिक निर्भरता से बचने की सलाह दी। मोदी सरकार की 'रणनीतिक स्वायत्तता' की नीति, जिसके तहत भारत बहुध्रुवीय विश्व में अपने हितों के अनुसार स्वतंत्र निर्णय लेता है, कौटिल्य के इस विचार से मेल खाती है। भारत ने विभिन्न वैश्विक शक्तियों के साथ संतुलित संबंध बनाए रखने की कोशिश की है, चाहे वह अमेरिका हो, रूस हो या चीन। परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) पर हस्ताक्षर न करना और अपनी रक्षा क्षमताओं को मजबूत करना भी इसी रणनीतिक स्वायत्तता के दृष्टिकोण का हिस्सा है।

कौटिल्य ने विभिन्न परिस्थितियों में कूटनीतिक चातुर्य का उपयोग करने की वकालत की थी। मोदी सरकार की विदेश नीति में भी विभिन्न प्रकार के कूटनीतिक उपकरणों का उपयोग दिखाई देता है। उदाहरण के लिए, सीमा विवादों को हल करने के लिए बातचीत ('संधि'), आतंकवाद के खिलाफ कठोर रुख ('विग्रह' का एक

पहलू), अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर सक्रिय भागीदारी ('यान'), और आवश्यकतानुसार तटस्थ रुख अपनाना ('आसन') आदि षड्गुणों के विभिन्न रूपों को दर्शाते हैं। डोकलाम गतिरोध और बालाकोट हवाई हमले जैसे उदाहरणों में भारत का दृढ़ रुख और कूटनीतिक कौशल दोनों दिखाई देते हैं।

कौटिल्य ने अर्थशास्त्र को शासन का आधार माना था और व्यापार तथा आर्थिक संबंधों के महत्व को समझा था। मोदी सरकार की 'मेक इन इंडिया' पहल और व्यापार समझौतों पर जोर आर्थिक शक्ति को बढ़ाने और विदेश नीति लक्ष्यों को प्राप्त करने के उपकरण के रूप में देखने के कौटिल्य के दृष्टिकोण से मेल खाता है। विभिन्न देशों के साथ व्यापारिक और निवेश संबंधों को बढ़ावा देना भारतीय विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण पहलू बन गया है।

कौटिल्य ने गुप्तचर तंत्र और आंतरिक सुरक्षा को मजबूत रखने पर विशेष जोर दिया था। मोदी सरकार ने राष्ट्रीय सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है और खुफिया एजेंसियों को मजबूत करने तथा सीमा सुरक्षा को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया है। आतंकवाद और सीमा पार से होने वाली गतिविधियों के प्रति सरकार का कठोर रवैया कौटिल्य के सुरक्षा संबंधी विचारों से प्रेरित हो सकता है।

हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि भारतीय विदेश नीति केवल कौटिल्य के विचारों से ही निर्देशित नहीं होती है। यह महात्मा गांधी के शांति और अहिंसा के सिद्धांतों, जवाहरलाल नेहरू की गुटनिरपेक्षता की नीति और वर्तमान वैश्विक वास्तविकताओं से भी प्रभावित है। इसके अतिरिक्त, वैश्वीकरण, जलवायु परिवर्तन और आतंकवाद जैसी आधुनिक चुनौतियाँ भारतीय विदेश नीति के लिए नए आयाम प्रस्तुत करती हैं, जिनका उल्लेख कौटिल्य के समय में नहीं था।

भारत की विदेश नीति सदियों से चली आ रही अपनी सभ्यतागत मूल्यों, भौगोलिक वास्तविकताओं और बदलती वैश्विक परिस्थितियों से प्रभावित रही है। स्वतंत्रता के बाद, भारत ने गुटनिरपेक्षता, पंचशील और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व जैसे सिद्धांतों को अपनी विदेश नीति का आधार बनाया। वर्तमान में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय विदेश नीति में 'पड़ोसी प्रथम' (Neighbourhood First) की नीति और प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन के 'मंडल सिद्धांत' का एक विशिष्ट समन्वय देखने को मिलता है। यह समन्वय न केवल भारत के तात्कालिक भू-राजनीतिक हितों को साधने का प्रयास करता है, बल्कि दीर्घकालिक क्षेत्रीय स्थिरता और समृद्धि को भी लक्षित करता है।

'पड़ोसी प्रथम' नीति, जैसा कि नाम से स्पष्ट है, भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को सर्वोच्च प्राथमिकता देती है। इसका उद्देश्य इन देशों के साथ विश्वास और सहयोग का एक मजबूत ढांचा तैयार करना है, जिससे आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिले और साझा चुनौतियों का सामना किया जा सके। मोदी सरकार ने इस नीति को सक्रिय रूप से आगे बढ़ाया है। इसके तहत पड़ोसी देशों के साथ उच्च-स्तरीय यात्राओं का आयोजन, द्विपक्षीय वार्ताओं में वृद्धि, विकास परियोजनाओं में सहायता, और कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने पर विशेष ध्यान दिया गया है। उदाहरण के लिए, बांग्लादेश के साथ भूमि सीमा समझौते का कार्यान्वयन, नेपाल और भूटान के साथ ऊर्जा सहयोग को मजबूत करना, श्रीलंका को आर्थिक सहायता प्रदान करना, और मालदीव के साथ समुद्री सुरक्षा सहयोग बढ़ाना इस नीति के कुछ प्रमुख उदाहरण हैं।

साहित्य की समीक्षा

'पड़ोसी प्रथम' नीति का क्रियान्वयन कई कारणों से महत्वपूर्ण है। पहला, भारत की सुरक्षा और स्थिरता सीधे तौर पर उसके पड़ोस में शांति और समृद्धि से जुड़ी हुई है। अस्थिर और कमजोर पड़ोसी देश भारत के लिए

सुरक्षा चुनौतियां उत्पन्न कर सकते हैं, जैसे कि सीमा पार आतंकवाद, अवैध प्रवास और हथियारों की तस्करी। [1]

आर्थिक विकास के लिए क्षेत्रीय सहयोग आवश्यक है। बेहतर कनेक्टिविटी और व्यापारिक संबंधों से पूरे क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिल सकता है, जिसका लाभ भारत को भी मिलेगा। तीसरा, वैश्विक मंच पर भारत की भूमिका को मजबूत करने के लिए अपने पड़ोसियों का समर्थन महत्वपूर्ण है। एक एकजुट और सहयोगी दक्षिण एशियाई क्षेत्र विश्व में भारत की आवाज को अधिक प्रभावी बना सकता है। [2]

मंडल सिद्धांत' प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारक कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित किया गया था। यह सिद्धांत बताता है कि एक राज्य को अपने पड़ोसी राज्यों के साथ किस प्रकार के संबंध रखने चाहिए। इसके अनुसार, एक केंद्रीय राज्य (विजिगीषु - विजेता) के चारों ओर मित्र राज्य (मित्र), शत्रु राज्य (अरि), मित्र के मित्र (मित्रमित्र), शत्रु का शत्रु (अरिमित्र) आदि का एक मंडल होता है। [3]

सिद्धांत यह निर्देशित करता है कि राजा को अपने हितों की रक्षा के लिए इन राज्यों के साथ सावधानीपूर्वक संबंध बनाने चाहिए, मित्रों को मजबूत करना चाहिए और शत्रुओं को कमजोर करना चाहिए, आवश्यकतानुसार गठबंधन और संघर्ष की नीति अपनानी चाहिए। [4]

भारतीय विदेश नीति में कौटिल्य के नीतियों के प्रभाव की समीक्षा करें : मोदी जी के कार्यकाल में

मोदी जी के कार्यकाल में 'पड़ोसी प्रथम' नीति को 'मंडल सिद्धांत' के व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है। जबकि 'पड़ोसी प्रथम' नीति सभी पड़ोसी देशों के साथ सकारात्मक और सहयोगात्मक संबंधों पर जोर देती है, 'मंडल सिद्धांत' की रणनीतिक गहराई भारत को अपने भू-राजनीतिक हितों के प्रति सजग रहने और आवश्यकतानुसार व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा देती है। उदाहरण के लिए, पाकिस्तान के साथ

भारत के संबंध 'पड़ोसी प्रथम' नीति के बावजूद तनावपूर्ण बने हुए हैं, जिसका मुख्य कारण सीमा पार आतंकवाद है। इस संदर्भ में, भारत का रुख 'मंडल सिद्धांत' के अनुरूप अपने सुरक्षा हितों को प्राथमिकता देने वाला रहा है। इसी प्रकार, चीन के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए, भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को मजबूत करके एक प्रकार का प्रतिरोधक तंत्र विकसित करने का प्रयास कर रहा है, जो 'मंडल सिद्धांत' के रणनीतिक पहलुओं से मेल खाता है।

'पड़ोसी प्रथम' नीति और 'मंडल सिद्धांत' के इस समन्वय में कुछ चुनौतियां भी हैं। पड़ोसी देशों की अपनी आंतरिक राजनीतिक अस्थिरता, चीन का बढ़ता प्रभाव, और आपसी अविश्वास कभी-कभी इन नीतियों के क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न करते हैं। इसके अतिरिक्त, विकास परियोजनाओं में देरी और कनेक्टिविटी की कमी भी वांछित परिणाम प्राप्त करने में कठिनाई पैदा कर सकती है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में भारतीय विदेश नीति में 'पड़ोसी प्रथम' नीति और 'मंडल सिद्धांत' का एक विशिष्ट और महत्वपूर्ण समन्वय दिखाई देता है। 'पड़ोसी प्रथम' नीति जहां सभी पड़ोसी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण और सहयोगात्मक संबंधों को प्राथमिकता देती है, वहीं 'मंडल सिद्धांत' भारत को अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखने और अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने के लिए एक व्यापक ढांचा प्रदान करता है। यह समन्वय भारत को अपने पड़ोस में स्थिरता और समृद्धि को बढ़ावा देने के साथ-साथ, क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर अपनी भूमिका को मजबूत करने में सहायक सिद्ध हो सकता है। भविष्य में, इन नीतियों की सफलता पड़ोसी देशों के साथ आपसी विश्वास और समझ को गहरा करने, साझा चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने, और बदलते भू-राजनीतिक परिदृश्य के अनुकूल रणनीतिक लचीलापन बनाए रखने पर निर्भर करेगी।

भारत की विदेश नीति, अपनी स्थापना के समय से ही, रणनीतिक स्वायत्तता के सिद्धांत पर आधारित रही है। इसका तात्पर्य है कि भारत अपनी विदेश नीति के निर्णय अपने राष्ट्रीय हितों और प्राथमिकताओं के अनुसार

लेगा, बिना किसी बाहरी शक्ति के दबाव या प्रभाव में आए। शक्ति संतुलन, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जिसमें विभिन्न राष्ट्र अपनी शक्ति और प्रभाव को इस प्रकार व्यवस्थित करते हैं कि कोई भी एक राष्ट्र या समूह हावी न हो सके। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय विदेश नीति ने इन दोनों सिद्धांतों को और अधिक मुखरता और सक्रियता से आगे बढ़ाया है।

मोदी सरकार के कार्यकाल में, रणनीतिक स्वायत्तता भारतीय विदेश नीति का एक केंद्रीय स्तंभ बनकर उभरा है। भारत ने बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था को बढ़ावा देने और किसी भी एक शक्ति गुट के साथ स्थायी रूप से जुड़ने से बचने की अपनी नीति को दृढ़ता से जारी रखा है। इसका स्पष्ट उदाहरण रूस-यूक्रेन संघर्ष पर भारत का रुख है। पश्चिमी देशों के भारी दबाव के बावजूद, भारत ने रूस की निंदा करने से परहेज किया और अपने राष्ट्रीय हितों को सर्वोपरि रखते हुए रूस से ऊर्जा और रक्षा उपकरणों की खरीद जारी रखी। इसी प्रकार, भारत ने ईरान के साथ अपने संबंधों को बनाए रखा है, जबकि अमेरिका ने उस पर कड़े प्रतिबंध लगाए हुए हैं। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि भारत अपनी विदेश नीति के विकल्पों को स्वतंत्र रूप से चुनने के लिए प्रतिबद्ध है।

रणनीतिक स्वायत्तता का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू विभिन्न देशों और क्षेत्रों के साथ संतुलित और बहुआयामी संबंध स्थापित करना है। मोदी सरकार ने अमेरिका, रूस, चीन, यूरोपीय संघ, आसियान और खाड़ी देशों सहित सभी प्रमुख शक्तियों और क्षेत्रीय समूहों के साथ अपने जुड़ाव को गहरा किया है। क्वाड में भारत की सक्रिय भागीदारी, जिसमें अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया भी शामिल हैं, हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। वहीं, शंघाई सहयोग संगठन की सदस्यता भारत को रूस और मध्य एशियाई देशों के साथ जुड़ने का अवसर प्रदान करती है। यह बहु-दिशात्मक दृष्टिकोण भारत को विभिन्न भू-राजनीतिक समीकरणों में अपने हितों की रक्षा करने में सक्षम बनाता है।

शक्ति संतुलन की दृष्टि से, मोदी सरकार ने भारत की सैन्य और आर्थिक क्षमताओं को मजबूत करने पर विशेष ध्यान दिया है। 'मेक इन इंडिया' पहल का उद्देश्य रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल करना है, जिससे भारत विदेशी हथियारों पर अपनी निर्भरता कम कर सके। आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए किए गए सुधार भारत को एक मजबूत वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करने में सहायक हैं। एक मजबूत अर्थव्यवस्था और एक सक्षम सैन्य बल भारत को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अधिक आत्मविश्वास और प्रभाव के साथ अपनी बात रखने की क्षमता प्रदान करते हैं।

मोदी सरकार की विदेश नीति में कूटनीति और संवाद पर भी जोर दिया गया है। प्रधानमंत्री मोदी ने विभिन्न वैश्विक मंचों पर सक्रिय रूप से भाग लिया है और द्विपक्षीय वार्ताओं के माध्यम से महत्वपूर्ण मुद्दों पर सहमति बनाने का प्रयास किया है। आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन और वैश्विक स्वास्थ्य जैसे साझा चुनौतियों का सामना करने के लिए भारत ने अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा दिया है।

भारतीय विदेश नीति के समक्ष कुछ चुनौतियां भी मौजूद हैं। चीन का बढ़ता सैन्य और आर्थिक प्रभाव, सीमा विवाद, आतंकवाद और वैश्विक अस्थिरता ऐसे कारक हैं जो भारत की रणनीतिक स्वायत्तता और शक्ति संतुलन की आकांक्षाओं के लिए चुनौतियां पेश करते हैं। इन चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने के लिए, भारत को अपनी आर्थिक और सैन्य क्षमताओं को लगातार मजबूत करना होगा, कूटनीतिक प्रयासों को जारी रखना होगा और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना होगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में भारतीय विदेश नीति ने रणनीतिक स्वायत्तता और शक्ति संतुलन के सिद्धांतों को और अधिक दृढ़ता और सक्रियता से आगे बढ़ाया है। भारत ने बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था का समर्थन करते हुए, किसी भी एक शक्ति गुट से बंधने से परहेज किया है और सभी प्रमुख देशों के साथ संतुलित संबंध बनाए रखे हैं। सैन्य और आर्थिक क्षमताओं को मजबूत करने के प्रयासों ने भारत को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अधिक

आत्मविश्वास और प्रभाव प्रदान किया है। चुनौतियों के बावजूद, भारत की विदेश नीति अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने और वैश्विक शांति और स्थिरता में योगदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। रणनीतिक स्वायत्तता और शक्ति संतुलन के सिद्धांतों पर आधारित यह दृष्टिकोण भारत को एक महत्वपूर्ण वैश्विक शक्ति के रूप में अपनी भूमिका को प्रभावी ढंग से निभाने में मदद करेगा।

मोदी सरकार ने राष्ट्रीय सुरक्षा को अपनी विदेश नीति के केंद्र में रखा है। सीमा पार आतंकवाद, साइबर खतरे, और क्षेत्रीय अस्थिरता जैसी चुनौतियों का सामना करते हुए, सरकार ने गुप्तचर तंत्र को मजबूत करने और उसका प्रभावी उपयोग करने पर विशेष ध्यान दिया है। खुफिया एजेंसियों को आधुनिक तकनीक और बेहतर प्रशिक्षण प्रदान किया गया है, जिससे उनकी सूचना एकत्र करने, विश्लेषण करने और समय पर कार्रवाई करने की क्षमता में वृद्धि हुई है।

गुप्तचर तंत्र की भूमिका विदेश नीति के कई पहलुओं में देखी जा सकती है। सीमा पार आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए, खुफिया एजेंसियां दुश्मन के ठिकानों, उनकी योजनाओं और गतिविधियों की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती हैं। यह जानकारी न केवल सैन्य कार्रवाई की योजना बनाने में सहायक होती है, बल्कि राजनयिक प्रयासों को भी दिशा देती है। उदाहरण के लिए, पाकिस्तान स्थित आतंकवादी समूहों की गतिविधियों पर खुफिया जानकारी भारत को अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर आतंकवाद के मुद्दे को प्रभावी ढंग से उठाने और पाकिस्तान पर दबाव बनाने में मदद करती है।

गुप्तचर तंत्र पड़ोसी देशों और अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में राजनीतिक और सुरक्षा संबंधी घटनाक्रमों पर भी नजर रखता है। यह जानकारी भारत को अपनी विदेश नीति को समय पर समायोजित करने और संभावित खतरों का पूर्वानुमान लगाने में सक्षम बनाती है। उदाहरण के लिए, अफगानिस्तान में तालिबान के उदय और उसके क्षेत्रीय सुरक्षा पर पड़ने वाले प्रभावों का आकलन करने में खुफिया एजेंसियों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

सुरक्षा के दृष्टिकोण से, मोदी सरकार ने रक्षा और सुरक्षा सहयोग को अपनी विदेश नीति का एक अभिन्न अंग बनाया है। विभिन्न देशों के साथ रक्षा समझौते किए गए हैं, संयुक्त सैन्य अभ्यास आयोजित किए गए हैं, और रक्षा उपकरणों की खरीद को प्राथमिकता दी गई है। यह न केवल भारत की सैन्य क्षमता को बढ़ाता है, बल्कि अन्य देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी को भी मजबूत करता है।

भारत ने आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय रूप से काम किया है। वित्तीय कार्रवाई कार्यदल (एफएटीएफ) जैसे वैश्विक मंचों पर भारत ने आतंकवाद के वित्तपोषण को रोकने और आतंकी समूहों पर दबाव बनाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके अलावा, भारत ने साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में भी अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा दिया है, क्योंकि साइबर हमले राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक बढ़ता हुआ खतरा हैं।

मोदी सरकार की विदेश नीति में गुप्तचर तंत्र और सुरक्षा का महत्व कई सफलताओं में परिलक्षित होता है। सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक जैसे सैन्य अभियानों में खुफिया जानकारी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसके अलावा, अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत की बढ़ती हुई प्रतिष्ठा और प्रभाव भी प्रभावी सुरक्षा नीतियों और रणनीतिक साझेदारी का परिणाम है।

कुछ चुनौतियां भी मौजूद हैं। खुफिया जानकारी की सटीकता और समयबद्धता हमेशा सुनिश्चित करना एक कठिन कार्य है। इसके अलावा, साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में लगातार विकसित हो रहे खतरों से निपटने के लिए खुफिया एजेंसियों को लगातार अपनी क्षमताओं को उन्नत करना होगा। पड़ोसी देशों के साथ जटिल सुरक्षा संबंधों को प्रबंधित करना और क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखना भी एक सतत चुनौती है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में भारतीय विदेश नीति में गुप्तचर तंत्र और सुरक्षा ने एक केंद्रीय भूमिका निभाई है। सरकार ने इन दोनों तत्वों को मजबूत करने और उनका प्रभावी उपयोग करने पर विशेष ध्यान दिया है। खुफिया एजेंसियों की बढ़ी हुई क्षमता और सक्रिय सुरक्षा नीतियों ने भारत को राष्ट्रीय सुरक्षा चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने और अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अपनी स्थिति को मजबूत करने में मदद की है। भविष्य में, इन दोनों क्षेत्रों में निरंतर निवेश और रणनीतिक दृष्टिकोण भारतीय विदेश नीति की सफलता के लिए महत्वपूर्ण बने रहेंगे।

निष्कर्ष

यह कहना उचित होगा कि मोदी जी के कार्यकाल में भारतीय विदेश नीति में कौटिल्य के नीतियों का प्रत्यक्ष और पूर्ण प्रभाव दिखाई नहीं देता है। तथापि, राष्ट्रीय हितों की सर्वोच्चता, रणनीतिक स्वायत्तता, पड़ोसी देशों के साथ संतुलित संबंध, कूटनीतिक चातुर्य और आर्थिक तथा सुरक्षा पहलुओं पर जोर जैसे कुछ क्षेत्रों में कौटिल्य के विचारों की प्रतिध्वनि अवश्य सुनाई देती है। मोदी सरकार ने प्राचीन भारतीय ज्ञान और आधुनिक आवश्यकताओं के मिश्रण से अपनी विदेश नीति को आकार दिया है, जिसमें कौटिल्य के दूरदर्शी सिद्धांतों का निश्चित रूप से कुछ योगदान रहा है। भारतीय विदेश नीति का भविष्य इन ऐतिहासिक प्रभावों और समकालीन चुनौतियों के बीच संतुलन स्थापित करते हुए राष्ट्रीय हितों की रक्षा और वैश्विक शांति में योगदान देना जारी रखेगा।

संदर्भ

चौलिया एस. मोदी: भारत के प्रधानमंत्री की विदेश नीति। नई दिल्ली: ब्लूम्सबरी; 2019.

छिब्बर पीके, वर्मा आर. विचारधारा और पहचान: भारत की बदलती पार्टी प्रणाली। न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 2019.

फ्रेडरिक्स जी. गुटों से गुटों तक: विभिन्न पार्टी प्रणालियों में भारत की विदेश नीति की भूमिकाएँ। इंडिया रिव्यू। 2019;18(2):125–160.]

गांगुली एस. क्या मोदी ने वाकई भारत की विदेश नीति बदल दी है? वाशिंगटन क्वार्टरली. 2021;40(2):131–143.

थॉम्पसन डब्ल्यूआर. भारतीय अभिजात वर्ग के विदेश नीति दृष्टिकोण: भिन्नता, संरचना और सामान्य भाजक. विदेश नीति विश्लेषण. 2020;13(2):416–438.

जॉर्ज वीके. खुला आलिंगन: मोदी और ट्रंप के युग में भारत-अमेरिका संबंध. नई दिल्ली: पेंगुइन; 2021.

गोखले एन. मोदी के तरीके से भारत की सुरक्षा: पठानकोट, सर्जिकल स्ट्राइक और बहुत कुछ. नई दिल्ली: ब्लूम्सबरी; 2019.

गुप्ता एस, मुलेन आरडी, बसरूर आर, ब्लरेल एन, परदेसी एमएस, गांगुली एस. मोदी के तहत भारतीय विदेश नीति: एक नया ब्रांड या सिर्फ रीपैकेजिंग? अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन परिप्रेक्ष्य. 2019;20(1):1–45.